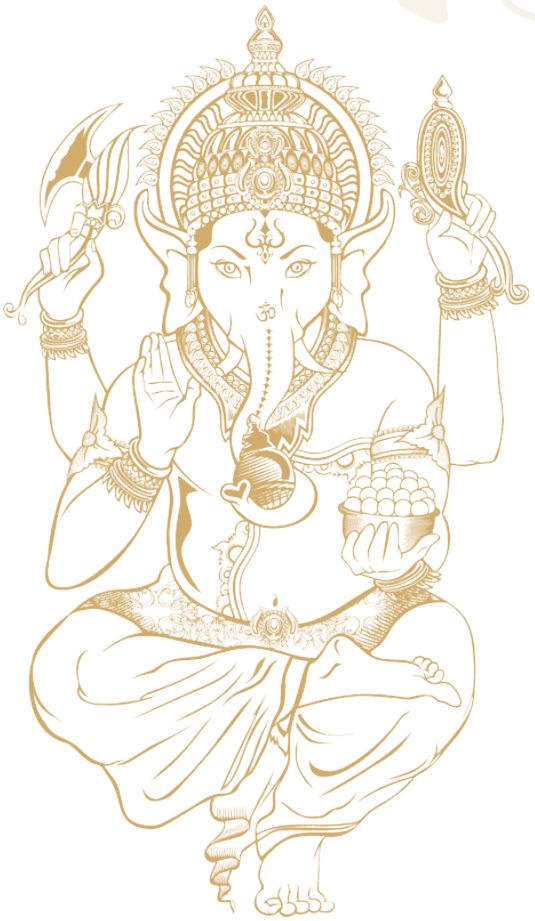

NIKHIL SHANKAR AGSAR

09 Sep 1987

09:10 PM

Ichallkaranji

Model: Web-KundliPhal **Order No: 121422201**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/09/1987**
दिवस	बुधवार
जन्म समय	**21:10:00 कला**
इष्ट	37:06:33 घटी
स्थान	**Ichallkaranji**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	16:40:00 उत्तर
रेखांश	74:33:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:31:48 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	20:38:12 कला
वेलान्तर	00:02:26 कला
साम्पातिक वेल	19:50:49 कला
सूर्योदय	06:19:22 कला
सूर्यास्त	18:39:00 कला
दिनमान	12:19:38 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	22:44:29 सिंह
लग्नाचे अंश	10:09:56 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मेष – मंगळ
राशि–स्वामी	**मीन – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**रेवती – 1**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	गण्ड
करण	वणिज
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दे–देवांशु
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	भाद्रपद	18
पंजाबी	संवत : 2044	भाद्रपद	24
बंगाली	सन् : 1394	भाद्रपद	23
तमिल	संवत : 2044	अवानी	24
केरल	कोल्लम : 1163	चिमगम	24
नेपाली	संवत : 2044	भाद्रपद	24
चैत्रादी	संवत : 2044	आश्विन	कृष्ण 2
कार्तिकादी	संवत : 2044	भाद्रपद	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 18:22:49
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: उ.भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 18:26:41 कला
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय समयी योग _____: गण्ड
योग समाप्ति वेल _____: 24:52:09 कला
जन्म योग _____: गण्ड
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 07:31:56 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 06:48:17
भभोग _____: 57:17:25
भोग्य दशा वेल _____: बुध 14 वर्ष 11 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
रवि _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृषभ
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

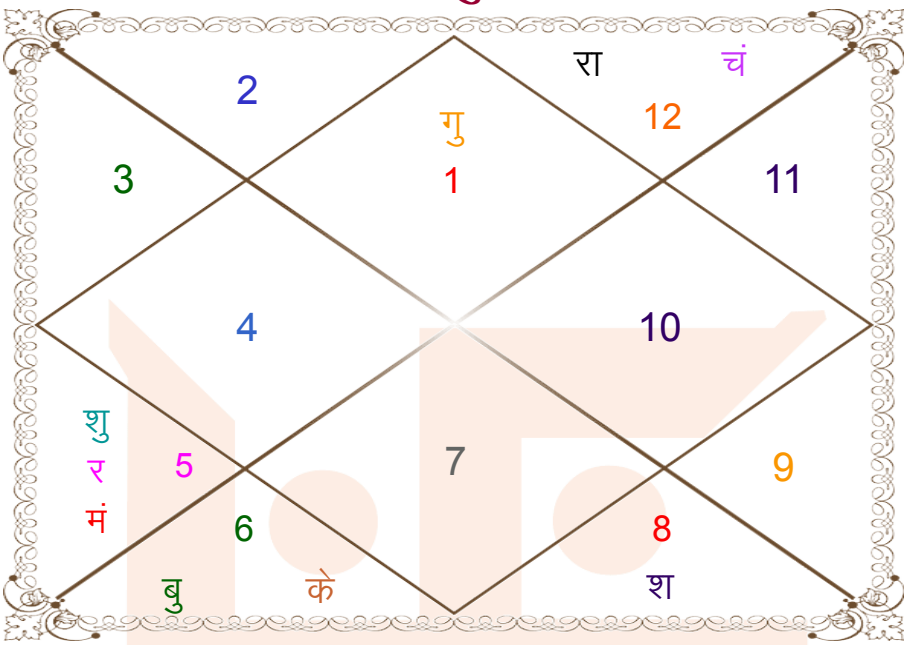

चन्द्र कुंडली

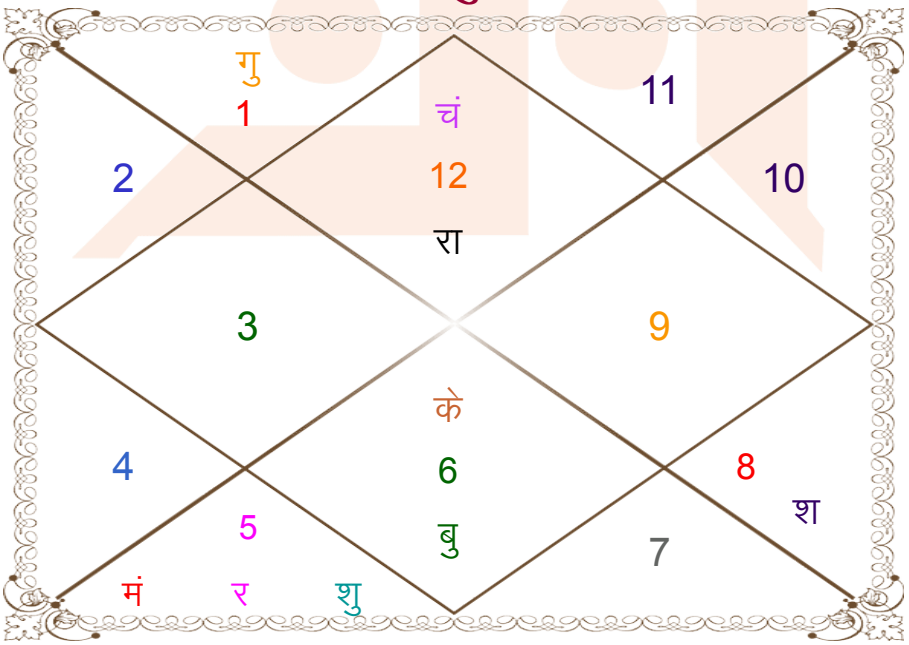

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

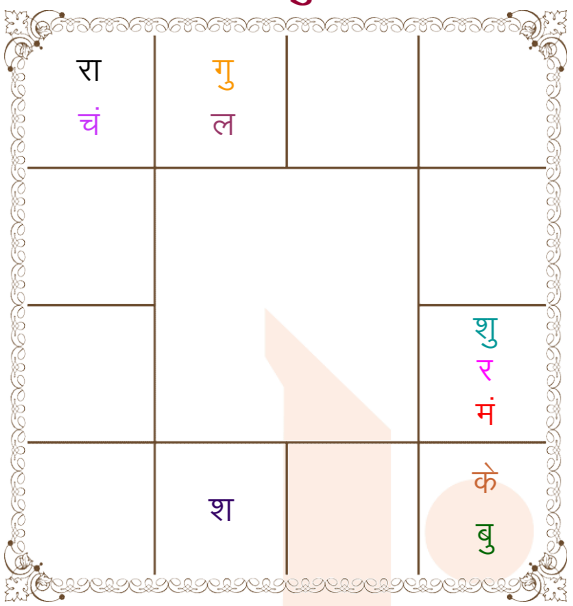

लग्न कुंडली

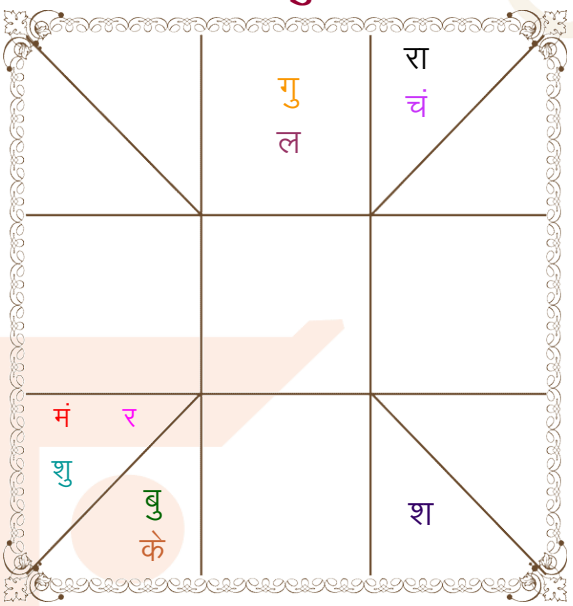

विंशोत्तरी

बुध 14वर्ष 11मा 14दि

बुध

09/09/1987

25/08/2105

बुध	24/08/2002
केतु	24/08/2009
शुक्र	24/08/2029
रवि	24/08/2035
चन्द्र	24/08/2045
मंगळ	24/08/2052
राहु	24/08/2070
गुरु	24/08/2086
शनि	25/08/2105

योगिनी

उल्का 5वर्ष 3मा 10दि

उल्का

20/12/2022

19/12/2028

उल्का	20/12/2023
सिद्धा	18/02/2025
संकटा	20/06/2026
मंगळा	20/08/2026
पिंगला	20/12/2026
धान्या	21/06/2027
भ्रामरी	19/02/2028
भद्रिका	19/12/2028

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	10:09:56	420:25:19	अश्विनी	4	1	मंगळ	केतु	शनि	———
सूर्य			सिंह	22:44:29	00:58:16	पू.फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	स्वगृही
चंद्र			मीन	18:16:11	14:06:47	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
मंगळ		अ	सिंह	17:39:52	00:38:15	पू.फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगळ	मित्र राशि
बुध			कन्या	09:38:54	01:35:11	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि
गुरु	व		मेष	05:19:59	00:04:03	अश्विनी	2	1	मंगळ	केतु	मंगळ	मित्र राशि
शुक्र		अ	सिंह	27:29:10	01:14:31	उ.फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
शनि			वृश्चि	21:12:54	00:02:03	ज्येष्ठा	2	18	मंगळ	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			मीन	08:41:05	00:00:24	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
केतु			कन्या	08:41:05	00:00:24	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृश्चि	29:03:37	00:00:25	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	शनि	———
नेप	व		धनु	11:33:41	00:00:15	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	———
प्लूटो			तुला	14:15:05	00:01:41	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	———
दशम भाव			मक	02:02:19	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	गुरु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:41:06

लग्न–चलित

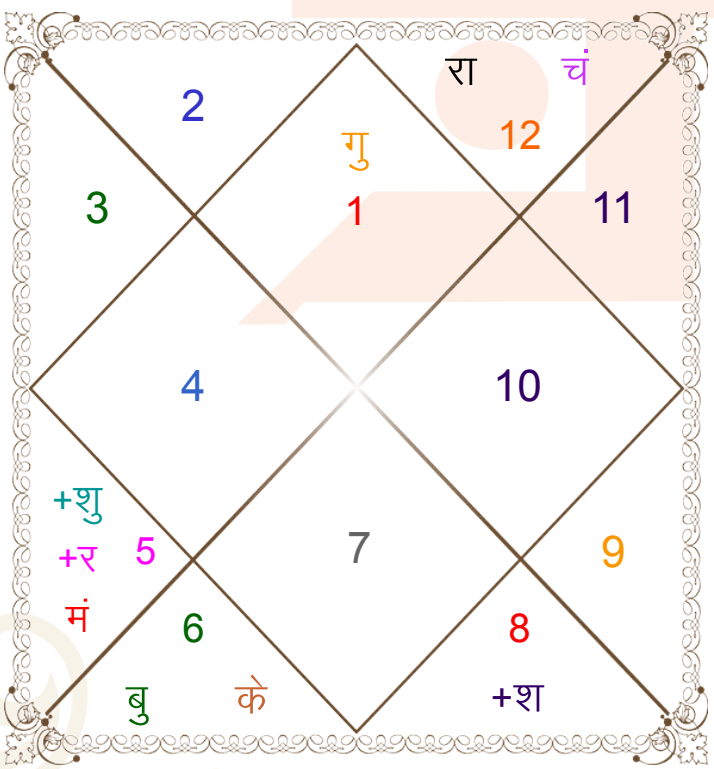

चन्द्र कुंडली

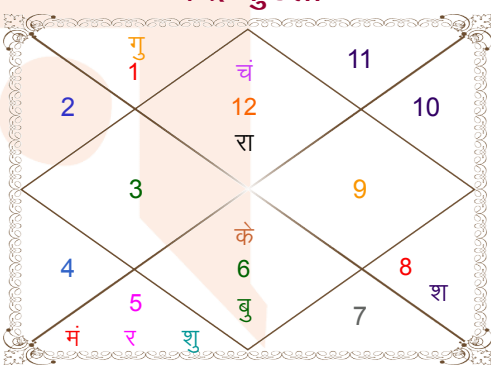

नवमांश कुंडली

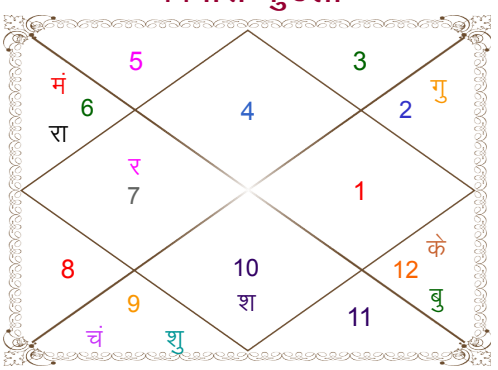

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मीन	23:48:40	मेष	10:09:56
2	मेष	23:48:40	वृषभ	07:27:24
3	वृषभ	21:06:08	मिथुन	04:44:51
4	मिथुन	18:23:35	कर्क	02:02:19
5	कर्क	18:23:35	सिंह	04:44:51
6	सिंह	21:06:08	कन्या	07:27:24
7	कन्या	23:48:40	तुला	10:09:56
8	तुला	23:48:40	वृश्चिक	07:27:24
9	वृश्चिक	21:06:08	धनु	04:44:51
10	धनु	18:23:35	मकर	02:02:19
11	मकर	18:23:35	कुम्भ	04:44:51
12	कुम्भ	21:06:08	मीन	07:27:24

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	10:09:56
2	वृषभ	10:24:12
3	मिथुन	06:29:25
4	कर्क	02:02:19
5	सिंह	00:19:50
6	कन्या	03:34:35
7	तुला	10:09:56
8	वृश्चिक	10:24:12
9	धनु	06:29:25
10	मकर	02:02:19
11	कुम्भ	00:19:50
12	मीन	03:34:35

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

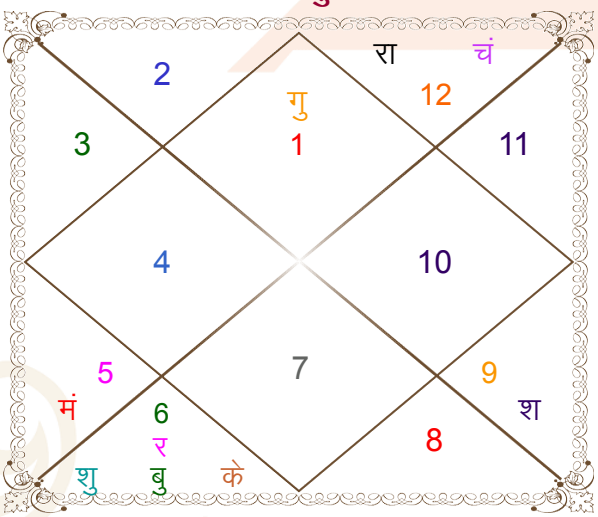

भाव कुंडली

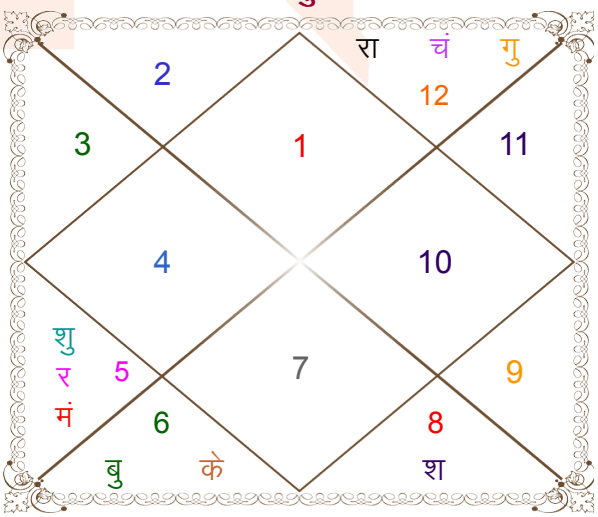

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.94	57 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	शान्त	गमन	8.12	35 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	युवा	विकल	कौतुक	0.00	10 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	वृद्ध	दीप्त	गमन	14.55	80 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	मुदित	नेत्रपाणि	3.51	40 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	विकल	गमन	0.52	42 %
शनि	भ्रातृ	आयुष्य	कुमार	खल	कौतुक	4.13	71 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	शान्त	गमन	0.00	0 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	खल	गमन	0.00	92 %
एकुण						**34.78**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद

चलित कुंडली

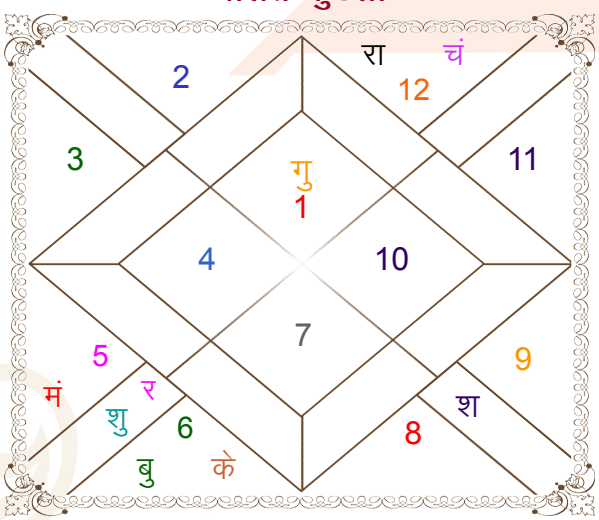

लग्न–चलित

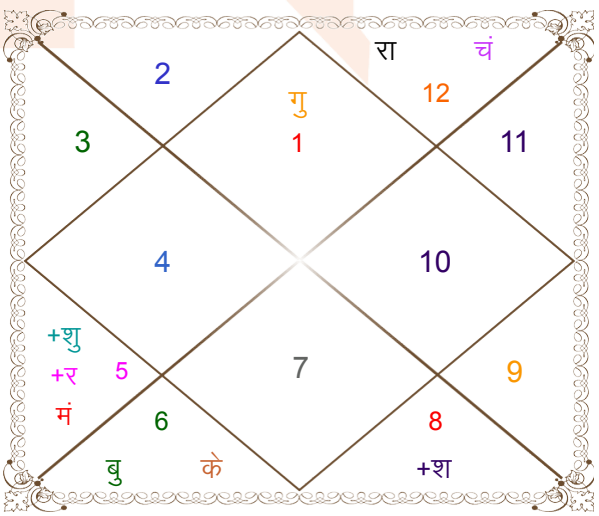

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 14 वर्ष 11 महिना 14 दिवस

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
09/09/1987		24/08/2002		24/08/2009		24/08/2029		24/08/2035	
24/08/2002		24/08/2009		24/08/2029		24/08/2035		24/08/2045	
बुध	20/01/1988	केतु	20/01/2003	शुक्र	23/12/2012	सूर्य	11/12/2029	चंद्र	24/06/2036
केतु	17/01/1989	शुक्र	21/03/2004	सूर्य	24/12/2013	चंद्र	12/06/2030	मंगळ	23/01/2037
शुक्र	18/11/1991	सूर्य	27/07/2004	चंद्र	24/08/2015	मंगळ	18/10/2030	राहु	25/07/2038
सूर्य	23/09/1992	चंद्र	25/02/2005	मंगळ	23/10/2016	राहु	12/09/2031	गुरु	24/11/2039
चंद्र	22/02/1994	मंगळ	24/07/2005	राहु	24/10/2019	गुरु	30/06/2032	शनि	24/06/2041
मंगळ	20/02/1995	राहु	12/08/2006	गुरु	24/06/2022	शनि	12/06/2033	बुध	23/11/2042
राहु	08/09/1997	गुरु	19/07/2007	शनि	24/08/2025	बुध	18/04/2034	केतु	24/06/2043
गुरु	15/12/1999	शनि	27/08/2008	बुध	24/06/2028	केतु	24/08/2034	शुक्र	22/02/2045
शनि	24/08/2002	बुध	24/08/2009	केतु	24/08/2029	शुक्र	24/08/2035	सूर्य	24/08/2045

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
24/08/2045		24/08/2052		24/08/2070		24/08/2086		25/08/2105	
24/08/2052		24/08/2070		24/08/2086		25/08/2105		00/00/0000	
मंगळ	20/01/2046	राहु	07/05/2055	गुरु	11/10/2072	शनि	27/08/2089	बुध	10/09/2107
राहु	07/02/2047	गुरु	29/09/2057	शनि	25/04/2075	बुध	06/05/2092		00/00/0000
गुरु	14/01/2048	शनि	05/08/2060	बुध	30/07/2077	केतु	15/06/2093		00/00/0000
शनि	22/02/2049	बुध	23/02/2063	केतु	06/07/2078	शुक्र	14/08/2096		00/00/0000
बुध	19/02/2050	केतु	12/03/2064	शुक्र	06/03/2081	सूर्य	27/07/2097		00/00/0000
केतु	19/07/2050	शुक्र	13/03/2067	सूर्य	24/12/2081	चंद्र	26/02/2099		00/00/0000
शुक्र	18/09/2051	सूर्य	05/02/2068	चंद्र	25/04/2083	मंगळ	07/04/2100		00/00/0000
सूर्य	23/01/2052	चंद्र	06/08/2069	मंगळ	30/03/2084	राहु	11/02/2103		00/00/0000
चंद्र	24/08/2052	मंगळ	24/08/2070	राहु	24/08/2086	गुरु	25/08/2105		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 14 वर्ष 11 मा 23 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ	
24/08/2025		24/06/2028		24/08/2029		11/12/2029		12/06/2030	
24/06/2028		24/08/2029		11/12/2029		12/06/2030		18/10/2030	
बुध	17/01/2026	केतु	19/07/2028	सूर्य	29/08/2029	चंद्र	27/12/2029	मंगळ	19/06/2030
केतु	19/03/2026	शुक्र	28/09/2028	चंद्र	07/09/2029	मंगळ	06/01/2030	राहु	09/07/2030
शुक्र	07/09/2026	सूर्य	19/10/2028	मंगळ	14/09/2029	राहु	03/02/2030	गुरु	26/07/2030
सूर्य	29/10/2026	चंद्र	23/11/2028	राहु	30/09/2029	गुरु	27/02/2030	शनि	15/08/2030
चंद्र	23/01/2027	मंगळ	18/12/2028	गुरु	15/10/2029	शनि	28/03/2030	बुध	02/09/2030
मंगळ	25/03/2027	राहु	20/02/2029	शनि	01/11/2029	बुध	23/04/2030	केतु	09/09/2030
राहु	27/08/2027	गुरु	18/04/2029	बुध	17/11/2029	केतु	03/05/2030	शुक्र	01/10/2030
गुरु	12/01/2028	शनि	24/06/2029	केतु	23/11/2029	शुक्र	03/06/2030	सूर्य	07/10/2030
शनि	24/06/2028	बुध	24/08/2029	शुक्र	11/12/2029	सूर्य	12/06/2030	चंद्र	18/10/2030

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
18/10/2030		12/09/2031		30/06/2032		12/06/2033		18/04/2034	
12/09/2031		30/06/2032		12/06/2033		18/04/2034		24/08/2034	
राहु	06/12/2030	गुरु	21/10/2031	शनि	24/08/2032	बुध	26/07/2033	केतु	26/04/2034
गुरु	19/01/2031	शनि	06/12/2031	बुध	12/10/2032	केतु	13/08/2033	शुक्र	17/05/2034
शनि	12/03/2031	बुध	16/01/2032	केतु	01/11/2032	शुक्र	04/10/2033	सूर्य	23/05/2034
बुध	28/04/2031	केतु	02/02/2032	शुक्र	29/12/2032	सूर्य	19/10/2033	चंद्र	03/06/2034
केतु	17/05/2031	शुक्र	22/03/2032	सूर्य	15/01/2033	चंद्र	14/11/2033	मंगळ	10/06/2034
शुक्र	11/07/2031	सूर्य	06/04/2032	चंद्र	13/02/2033	मंगळ	02/12/2033	राहु	30/06/2034
सूर्य	27/07/2031	चंद्र	30/04/2032	मंगळ	05/03/2033	राहु	18/01/2034	गुरु	17/07/2034
चंद्र	23/08/2031	मंगळ	17/05/2032	राहु	26/04/2033	गुरु	28/02/2034	शनि	06/08/2034
मंगळ	12/09/2031	राहु	30/06/2032	गुरु	12/06/2033	शनि	18/04/2034	बुध	24/08/2034

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
24/08/2034		24/08/2035		24/06/2036		23/01/2037		25/07/2038	
24/08/2035		24/06/2036		23/01/2037		25/07/2038		24/11/2039	
शुक्र	24/10/2034	चंद्र	19/09/2035	मंगळ	06/07/2036	राहु	15/04/2037	गुरु	28/09/2038
सूर्य	11/11/2034	मंगळ	06/10/2035	राहु	07/08/2036	गुरु	27/06/2037	शनि	14/12/2038
चंद्र	12/12/2034	राहु	21/11/2035	गुरु	04/09/2036	शनि	22/09/2037	बुध	21/02/2039
मंगळ	02/01/2035	गुरु	01/01/2036	शनि	08/10/2036	बुध	08/12/2037	केतु	21/03/2039
राहु	26/02/2035	शनि	18/02/2036	बुध	07/11/2036	केतु	09/01/2038	शुक्र	10/06/2039
गुरु	15/04/2035	बुध	01/04/2036	केतु	20/11/2036	शुक्र	11/04/2038	सूर्य	05/07/2039
शनि	12/06/2035	केतु	19/04/2036	शुक्र	25/12/2036	सूर्य	08/05/2038	चंद्र	14/08/2039
बुध	03/08/2035	शुक्र	08/06/2036	सूर्य	05/01/2037	चंद्र	23/06/2038	मंगळ	12/09/2039
केतु	24/08/2035	सूर्य	24/06/2036	चंद्र	23/01/2037	मंगळ	25/07/2038	राहु	24/11/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
24/11/2039		24/06/2041		23/11/2042		24/06/2043		22/02/2045	
24/06/2041		23/11/2042		24/06/2043		22/02/2045		24/08/2045	
शनि	23/02/2040	बुध	05/09/2041	केतु	06/12/2042	शुक्र	04/10/2043	सूर्य	03/03/2045
बुध	15/05/2040	केतु	05/10/2041	शुक्र	10/01/2043	सूर्य	03/11/2043	चंद्र	19/03/2045
केतु	18/06/2040	शुक्र	31/12/2041	सूर्य	21/01/2043	चंद्र	24/12/2043	मंगळ	29/03/2045
शुक्र	22/09/2040	सूर्य	26/01/2042	चंद्र	08/02/2043	मंगळ	29/01/2044	राहु	26/04/2045
सूर्य	21/10/2040	चंद्र	10/03/2042	मंगळ	20/02/2043	राहु	29/04/2044	गुरु	20/05/2045
चंद्र	08/12/2040	मंगळ	09/04/2042	राहु	24/03/2043	गुरु	19/07/2044	शनि	18/06/2045
मंगळ	11/01/2041	राहु	25/06/2042	गुरु	22/04/2043	शनि	23/10/2044	बुध	14/07/2045
राहु	08/04/2041	गुरु	02/09/2042	शनि	25/05/2043	बुध	18/01/2045	केतु	24/07/2045
गुरु	24/06/2041	शनि	23/11/2042	बुध	24/06/2043	केतु	22/02/2045	शुक्र	24/08/2045

मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध	
24/08/2045		20/01/2046		07/02/2047		14/01/2048		22/02/2049	
20/01/2046		07/02/2047		14/01/2048		22/02/2049		19/02/2050	
मंगळ	01/09/2045	राहु	18/03/2046	गुरु	25/03/2047	शनि	18/03/2048	बुध	14/04/2049
राहु	24/09/2045	गुरु	09/05/2046	शनि	18/05/2047	बुध	15/05/2048	केतु	06/05/2049
गुरु	14/10/2045	शनि	08/07/2046	बुध	05/07/2047	केतु	07/06/2048	शुक्र	05/07/2049
शनि	06/11/2045	बुध	01/09/2046	केतु	25/07/2047	शुक्र	14/08/2048	सूर्य	23/07/2049
बुध	27/11/2045	केतु	23/09/2046	शुक्र	20/09/2047	सूर्य	03/09/2048	चंद्र	22/08/2049
केतु	06/12/2045	शुक्र	26/11/2046	सूर्य	07/10/2047	चंद्र	07/10/2048	मंगळ	12/09/2049
शुक्र	31/12/2045	सूर्य	15/12/2046	चंद्र	04/11/2047	मंगळ	30/10/2048	राहु	06/11/2049
सूर्य	08/01/2046	चंद्र	16/01/2047	मंगळ	24/11/2047	राहु	30/12/2048	गुरु	24/12/2049
चंद्र	20/01/2046	मंगळ	07/02/2047	राहु	14/01/2048	गुरु	22/02/2049	शनि	19/02/2050

मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु	
19/02/2050		19/07/2050		18/09/2051		23/01/2052		24/08/2052	
19/07/2050		18/09/2051		23/01/2052		24/08/2052		07/05/2055	
केतु	28/02/2050	शुक्र	28/09/2050	सूर्य	24/09/2051	चंद्र	10/02/2052	राहु	18/01/2053
शुक्र	25/03/2050	सूर्य	19/10/2050	चंद्र	05/10/2051	मंगळ	23/02/2052	गुरु	30/05/2053
सूर्य	01/04/2050	चंद्र	23/11/2050	मंगळ	12/10/2051	राहु	26/03/2052	शनि	02/11/2053
चंद्र	14/04/2050	मंगळ	18/12/2050	राहु	31/10/2051	गुरु	23/04/2052	बुध	22/03/2054
मंगळ	23/04/2050	राहु	20/02/2051	गुरु	17/11/2051	शनि	27/05/2052	केतु	18/05/2054
राहु	15/05/2050	गुरु	18/04/2051	शनि	08/12/2051	बुध	26/06/2052	शुक्र	30/10/2054
गुरु	04/06/2050	शनि	24/06/2051	बुध	26/12/2051	केतु	08/07/2052	सूर्य	18/12/2054
शनि	27/06/2050	बुध	24/08/2051	केतु	02/01/2052	शुक्र	13/08/2052	चंद्र	10/03/2055
बुध	19/07/2050	केतु	18/09/2051	शुक्र	23/01/2052	सूर्य	24/08/2052	मंगळ	07/05/2055

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	9
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिवस	गुरू, रवि, मंगळ
शुभ ग्रह	गुरु, रवि, मंगळ
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पोवले
शुभ उपरत्न	लाल हकीक
भाग्य रत्न	पुष्कराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	95%	सन्तति सुख
पुष्कराज	गुरु	83%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
पोवले	मंगळ	81%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
हीरा	शुक्र	56%	सन्तति सुख, धन, दम्पति
गोमेद	राहु	52%	कम खर्च, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	47%	व्यय, ग्रह कलेश
नीलम	शनि	19%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि, हानि
पन्ना	बुध	9%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	3%	शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

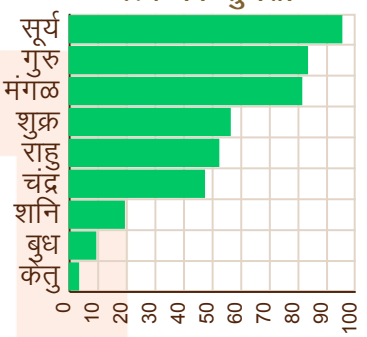

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	24/08/2002	100%	22%	81%	34%	83%	62%	19%	52%	3%
केतु	24/08/2009	82%	22%	88%	9%	83%	62%	0%	28%	28%
शुक्र	24/08/2029	82%	22%	81%	22%	83%	69%	31%	58%	16%
सूर्य	24/08/2035	100%	55%	88%	9%	89%	38%	0%	28%	0%
चंद्र	24/08/2045	100%	61%	81%	22%	83%	56%	19%	28%	0%
मंगळ	24/08/2052	100%	55%	94%	0%	89%	56%	19%	28%	16%
राहु	24/08/2070	82%	22%	69%	9%	83%	62%	31%	64%	0%
गुरु	24/08/2086	100%	55%	88%	0%	95%	38%	19%	52%	3%
शनि	25/08/2105	82%	22%	69%	22%	83%	62%	44%	58%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए हीरा एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम, पन्ना व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के

पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यो में अभिरूचि

देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते है। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे है तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते है। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्दिप अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्ट्मेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते है। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश का स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बना सकते है। हीरा रत्न धारण करने से आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण हीरा रत्न आपको कुटुम्ब से सुखी और विदेश स्थानों से लाभ दिला सकता है। शुक्र रत्न आपको पारिवारिक सुख के साथ धन संचय का सुख भी दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६

मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। आप राहु ग्रह का गोमेद रत्न धारण करें। रत्न धारण कर आप उदारवादी, महत्वाकांक्षी और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप परिश्रम के दम पर सुखी रहेंगे। गोमेद रत्न धारण करने से आपके लिए आध्यात्मिक ज्ञान पाना एक सहज कार्य होगा। आपकी रुचि वेदों और वेदांतों में होगी और आप साधु स्वभाव वाले व्यक्ति बनेंगे। राहु प्रभाव आपके भाग्य में वृद्धि कर आपकी आय प्राप्ति के भरपूर अवसर देगा। इसके अलावा रत्न धारण के बाद आप विवेकहीनता, छल-कपट, पापपूर्ण विचारों, प्रपंच और नीचकर्म से बचेंगे।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा

पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र अन्य ग्रह योगों के फलस्वरूप अपनी पूर्ण शुभता देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको नकद (रोकड़) धन की कमी हो सकती है। स्वास्थ्य सुख के प्रति आप अत्यधिक सचेत रहेंगे। छाती में कफ संबंधी रोग आपको शारीरिक स्वस्थता दे सकता है। बहन, माता एवं जमीन जायदाद के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बन रही है। चंद्र रत्न मोती आपके सुखों में अनियमितता दे सकता है। नजला जुकाम और पेट के ऊपरी भाग में आपको दर्द दे सकता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्ति में मोती रत्न धारण आपकी सफलता को सीमित कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। शनि आपको शुभ फल देने की स्थिति में नहीं है। अतः इस ग्रह का रत्न धारण करने पर आपकी मान, प्रतिष्ठा, कर्म, पिता, प्रभुता एवं अधिकारों का हनन हो सकता है। यह रत्न आपको व्यापार, हवन, अनुष्ठान, ऐश्वर्य भोग, कीर्तिलाभ, विदेश यात्रा, संपत्ति आदि में कष्ट दे सकता है। नीलम रत्न धारण से आपमें लोभ, स्वार्थ, गुलामी, संतान हीनता, रिश्वतखोरी एवं बेईमानी का भाव जन्म ले सकता है। चाचा, ताऊ, बुआ, बड़े भाईयों आदि विषयों के लिए शनि रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं बनी हुई है। आपके लिए यह रत्न बाधक भावेश का रत्न भी होने के कारण आपकी उन्नति में बाधक का कार्य भी करेगा।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने से आपमें विवेकशीलता की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके आत्मविश्वास भाव और पुरुषार्थ भाव को कमजोर कर सकता है। आपको शत्रुभय परेशान कर सकता है। आपके शत्रु चातुर्य और नीति योग्यता के प्रभाव से आपकी सफलता को बाधित कर सकते है। तार्किक बुद्धि का सहयोग आपको पूरा नहीं मिल पाएगा। बौद्धिकता योग्यता का सहयोग प्राप्त न होने के कारण आप बाहुबल से धनार्जन करने का प्रयास कर सकते है। आपके व्यय गलत कार्यों पर हो सकते है। पन्ना रत्न आपके

विनोदी स्वभाव को बढ़ा सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते है। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते है। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखर्ची के आदी हो सकते है। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते है। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(24/08/2009 - 24/08/2029)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती, पन्ना व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित

रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(24/08/2029 - 24/08/2035)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(24/08/2035 - 24/08/2045)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(24/08/2045 - 24/08/2052)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम, लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(24/08/2052 - 24/08/2070)

राहु की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती, पन्ना व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(24/08/2070 - 24/08/2086)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और नीलम, लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(24/08/2086 - 25/08/2105)

शनि की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती, पन्ना व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ऊँ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते है। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरूषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता हैं। इसका स्वामी जिस भाव में जाता हैं उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता हैं। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शात्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान हैं। इस भाव का स्वामी अर्थात अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता हैं। और अशुभ फलों में वृद्धि होती हैं। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव हैं। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग,कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह हैं। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता हैं। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती हैं। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता हैं। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता हैं।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि हैं। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही हैं। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती हैं। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान हैं। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि हैं। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टमस्थान चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थस्थान चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टमस्थान चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	कम खर्च
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	पराक्रम
अष्टमस्थान चरण	शुभ	दम्पति

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति पंचम भावात आहे पंचम भाव–संतति उच्च शिक्षा, तसेच बुद्धि चा भाव आहे, अतः मंगळ प्रभाव पासून आपण पुत्र संतति युद्ध रहणारे म्हणून तुम्हाळा जीवन साठी सुख भेंटणार. पण संतति प्राप्ति साठी काही उशीर होउ सकतात जीवनात आपण स्वतः परिश्रम आणि समज पासून उच्च शिक्षा प्राप्ति कराय साठी नेहमी प्रयत्न शील रहणारे यद्यपि या मधे कधीं–मधीं अड़चणे उत्पन्न होउ सकतात पण यांचा सामना साठी आपण सफळ रहणारे. तुमची तीव्र बुद्धि होणारी तसेच कधीं–मधीं तीव्रता चा भाव प्रदर्शित होणार, तुमची संवय कोण पण कार्य लवकर शुरू कराय ची होणारी. तसेच सरकारांचे मोठे आफीशर बरोबर चांगळे सम्बंध रहणार तसेच काही फायदे पण होणारे. पंचम भावात स्थित मंगळ ची चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव वर रहणारी या मुळे तुम्हाला उष्णता, पित्त, रक्त विकार वगेरे ची कधीं–मधीं त्रास होउ सकतात पण यांचे प्रभाव पासून तुम्हाळा विशेष किंवा एका–एकी धन लाभ चा योग आहे. सांसारिक विशेष कार्य मधे कधीं–मधीं अडचणे येउ सकतात पण यांचे सामना कराय साठी आपण सफळ होणारे, एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि आर्थिक उन्नति साठी शुभ रहणारी ह्या पासून जीवनात धन अर्जित करणारे तसच श्रीमंत सारख्या ख्याति प्राप्त होणारी तुमचे मिळकत चा श्रोत पण जास्ती रहणार समाजातीळ सम्मान ची वृद्धि होणारी. द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे तुमी कधीं–मधीं खर्चे जास्ती करणारे असे तुमचे शुभाशुभ कार्य मधे होणार. तसेच वाम डोण्या मधे कोणी पण चिन्ह किंवा कमजोरी पण होउ सकतात पण राजनैतिक लाभ सामान्य आणि सुखी, होणार. पंचम भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण सुखी जीवन साठी सफळ आणि समर्थ होणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म मेष लग्नी झाला आहे. त्याअर्थी आपले व्यक्तिमत्व आकर्षक असून इतरेजनांना आपल्याकडे आकर्षित करुन घेण्याची क्षमता विद्यमान आहे. आपला स्वभाव दृढ, चलाख आणि चंचल असेल परंतु त्यामध्ये उग्र आणि तीव्रताही असेल. न्याचबरोबर स्वाभिमानीही असाल. धन आणि ऐश्वर्य कष्टाने कमवून आनंदाने त्याचा उपभोग घेण्याकडे आपली प्रवृत्ती असेल. आपले आचरण चांगले राहील आणि स्वपराक्रमाने मानसन्मान व प्रतिष्ठेचे पद प्राप्त करण्यात यघ मिळवाल.

आपले आरोग्य सर्वसाधारणपणे उत्तम राहील तसेच शारीरिक वळही उत्तम राहील. आपण एक परिश्रमी व्यक्ति असाल आणि कठीणातील कठीण शारीकि किंवा मानसिक कष्ट सहन करण्याची क्षमता आपल्यात असेल. त्याचबरोबर आपल्या साहस आणि बुद्धिबलाद्वारे यघाचा मार्गामध्ये अग्रेसर राहाल. संवेदनघीलता आपल्यात थोडी कमी असेल. सांसारिक सुखसुविधा प्राप्त करुन त्याचा सुखाने उपभोग घेण्यात यघस्वी व्हाल. आपण स्पष्टवक्ते असल्याने काहीवेळा इतर लोक आपल्यावर असंतुष्ट असतील, परंतु त्याची चिंता आपण करत नाही. शत्रु किंवा विरोधी पक्षाला पराजित करण्यात आपण समर्थ असाल, परंतु त्याची चिंता आपण करत नाही. शत्रू किंवा विरोधी पक्षाला पराजित करण्यात आपण समर्थ असाल, त्यामुळे आपण एखादे उच्चाधिकार पद, व्यवस्थापक, सेना किंवा पोलिस अधिकारी बनू शकता. यातून समाजात आपली मानप्रतिष्ठा वाढेल आणि सर्व लोक आपला पराक्रम आणि प्रभाव स्वीकारतील.

आपले मित्र खूप असतील, पण सन्मित्र मात्र कमीच असतील. त्याचबरोबर भावंडे व नातेवाईकांघी आले संबंध सामान्य राहतील आणि त्यांच्यापासून सुख व सहयोग कमी प्रमाणात मिळेल. यथोक्तम्–

चण्डाभिमानी गुणवान सकोपः सुह्रद्विरोधी च सखा परेषाम्।
पराक्रम प्राप्त यघो विघेषो मेषोदये यः पुरुषोळति रोषः।।

– जातकाभरणम्

अर्थ – मेष लग्नाचा जातक स्वाभिमानी, गुणवान, क्रोधी, स्वजनविरोधी, इतरांचा मित्र व पराक्रमाने यघ प्राप्त करणारा असतो.

अघाप्रकारे आयुष्यात परिश्रम, संघर्ष व पराक्रमाने आपण सुख व प्रसन्नतेचा अनुभव घ्याल व समाजामध्ये यथोचित मानसन्मान प्राप्त करण्यात यघस्वी व्हाल. त्याचबरोबर एक प्रतापी व यघस्वी पुरुषाच्या रूपाने सामजामध्ये आपला प्रभाव राहील.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित आहे. त्याच्या प्रभावामुळे आपण आयुष्यात सर्व प्रकारची सुखे व धनऐश्वर्याचा उपभोग घेण्यास समर्थ असाल त्याचबरोबर एखाद्या नातेवाईकाकडून संपत्ती आदि प्राप्त होऊ शकते, कारण आपल्या जवळ्या नातेवाईकांविषयी आपल्या मनामध्ये नेहमीच चांगली भावना असेल आणि सुख–दुःखाच्या प्रसंगी आपण त्यांची सेवा व मदत करण्यास तत्पर असाल. बागबगिच्याविषयी आपल्या मनामध्ये रूची असेल आणि संधी मिळेल तेव्हा त्याअनुषंगाने आपण प्रयत्नही करत राहाल.

आपल्याला कौटुंबिक सुख उत्तम मिळेल आणि शांती व आनंदपूर्वक कुटुंबाबरोबर आपला काळ व्यतीत होईल. समाजामध्ये सुद्धा आपण एक सन्माननीय पुरूष म्हणून ओळखले जाईल आणि सर्व लोक आपल्याला यथोचित मानसन्मान प्रदान करतील. आपण स्वभावाने उदार आणि भावूक प्रवृत्तीच्या व्यक्ती असाल आणि मिष्ठान्न भक्षण करण्यामध्ये आपली रूची अधिक असेल. त्याचबरोबर बोलताना आपण नेहमी गोड शब्दांचा वापर कराल. याव्यतिरिक्त वाहन आणि बहुमूल्य रत्ने आपल्याला जीवनात प्राप्त होतील आणि सुख व प्रसन्नतेने जीवनाचा उपभोग घ्याल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या आईचे आरोग्य चांगले असेल आणि मुलांविषयी तिला माया असेल. त्याचबरोबर तुम्च्या वडिलांना आत्मशक्ती प्रदान करेल ज्यामुळे कुटुंबामध्ये सुख शांती व समृद्धि येईल. जर तुम्च्या आईला मुले किंवा पती तिची उपेक्षा करतात असे जाणवले तर ती ते सहन करू शकणार नाही व त्यामुळे तिला मानसिक कष्ट होतील. परंतु आपल्या कुटुंबाचे प्रामाणिकपणे पालनपोषण करेल व कुटुंबाचे उत्तरदायीत्व पूर्णपणे पार पाडेल. कुटुंबामध्ये प्रेमळ वातावरण निर्माण करण्यात यशस्वी होईल.

सुंदर व आकर्षक घरामध्ये राहाणे आपल्याला आवडते आणि घरामध्ये आपल्याला शांतता मिळेल. लहानपणापासूनच आपल्याला वाहन व घरासंबंधी सुख प्राप्त होईल व घराबरोबरच आपल्याला पैतृक संपत्तीसुद्धा प्राप्त होईल ज्याचा आयुष्यात आनंदाने उपभोग घ्याल. जुगार किंवा मालमत्तेच्या भानगडीत पडाल तर आर्थिक अस्थैर्याला तोंड द्यावे लागेल, म्हणून अशा गोष्टींपासून प्रयत्नपूर्वक दूर राहाणे चांगले. उच्च शिक्षणासंबंधी आपल्याला तीव्र इच्छा असेल आणि तीव्र इच्छाशक्तीने शैक्षणिक यश मिळवाल. विज्ञान क्षेत्रात उच्च शिक्षण घेण्यासाठी आपल्याला खूप कष्ट घ्यावे लागतील पण साहित्य, व्यापार व्यवस्थापन किंवा कायदे शिक्षण आपण सहजपणे प्राप्त करू शकाल. त्याचबरोबर आपल्याला उच्च शीलवान, गुणवान, अनेक शास्त्रांचे ज्ञाते व समाजाबरोबर प्रेमळ व्यवहार करणारे असाल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये रविची सिंह राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान, आदर्शवादी, थोर मनाचे व उदार प्रवृत्तीचे असाल. त्याचबरोबर समाजात इतरेजनांशी अतिउदार आणि दयाळूपणे वागाल व देवाच्या नावाने प्रयत्नपूर्वक दीनदुबळ्यांची सेवा व मदत कराल. एक स्वयंसेवकाच्या रूपाने आपण समाजाची सेवा कराल, त्यामुळे समाजामध्ये आपण एक सन्माननीय व्यक्ती म्हणून ओळखले जाल.

उच्च शिक्षण प्राप्त करण्याचा आपण प्रयत्न कराल. धार्मिक भावना असेल व वैदिक साहित्य किंवा ज्ञान प्राप्त करण्याचा प्रयत्न कराल. पूर्वजन्मावर विश्वास असल्याने पूर्वकर्माच्या फळांवर विश्वास असेल. पुत्रसंतती होईल व त्यापासून आपल्या अपेक्षित सुख व सहयोग प्राप्त होईल. वृद्धावस्थेत ते आपली सेवा करतील व आपल्याला खुश ठेवण्याचा प्रयत्न करतील. तारुण्यात प्रेमसंबंध होऊ शकतात, पण आपला विवाह शास्त्रानुसारच होईल. लोकांमध्ये आदरणीय व्यक्तीबरोबरच अधिकारी व्यक्ती म्हणून ओळखले जाल. प्रत्येक वस्तू किंवा माणसासंबंधी पूर्ण ज्ञान मिळवण्याचा प्रयत्न कराल. पत्नी किंवा भागीदारांबरोबर मतभेद होऊ शकतात. मुलांचा स्वभाव उग्र असेल पण त्यांचे डोळे सुंदर असतील. संतती आपल्या कार्यक्षेत्रात यशस्वी होईल व विदेश प्रवास किंवा निवास करू शकतात.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी बुद्धिमान, स्वच्छंद प्रवृत्ती व स्वाभिमानी असेल, कधी मत्सराचे प्रदर्शन करेल. आवाज मोठा असेल. कुटुंबाचे चांगले संगोपन करेल. तुम्ही तिची पूर्ण काळजी घ्यावी अशी तिची नेहमी अपेक्षा असेल. तिच्यासमोर इतर स्त्रियांची कधीही स्तुती करून तिची नाराजी ओढून घेऊ नका. घरामध्ये तिचे वर्चस्व राहील आणि तिच्यावर केवळ नीति व संयमानेच नियंत्रण ठेऊ शकाल.

आपला जीवन साथीदार सामान्यघ्ष्ट्या सुंदर, चतुर, उदार व आकर्षक व्यक्तिमत्वाचा असेल. सिंह, तूळ व धनु लग्नामध्ये उत्पन्न जातक आपल्यासाठी जीवन साथीदार म्हणून चांगली राहील व आपले दाम्पत्य जीवन सुखाने व्यतीत होईल. अतिआळस, अतिखर्च टाळावा, क्रोधावर नियंत्रण ठेवावे. व्यापार–व्यवसाय क्षेत्रामध्ये भागीदारीतून लाभ होईल, पण त्यासाठी आपल्याला पूणर्रूपेण सक्रीय राहावे लागेल. आपल्याला लष्कर, पोलिस विभाग, रासायनिक क्षेत्र, कायदा, व्यापार, उद्योग किंवा क्रीडासाहित्याचा क्रय–विक्रयातून उचित आजीविका प्राप्त होऊ शकते. आपली पत्नी स्वाभिमानी, पुण्य कर्म करणारी, धार्मिक, शांतप्रवृत्तीचा संतानाना जन्म देणारी तसेच नम्रता व क्षमाशील अशा गुणांनी युक्त असेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एकापेक्षा अधिक कार्य किंवा व्यापार कराल. त्याचबरोबर जास्त पैसे कमवण्यासाठी गुंतवणूक करण्याकडेसुद्धा तुमचा ओढा असेल. एका जागी स्थिर राहण्याची वृत्ती नसल्याने प्रवास जास्त कराल, मात्र संतुष्टी कमी मिळेल.

तेल, स्थावरमालमत्ता, वाहन आदिंचा व्यापार, कृषि व सिंचन विभाग तसेच अध्ययनसंबंधी कार्यामध्ये आपल्या उपजीविकेचा संबंध असेल. त्याचबरोबर चामड्याच्या व्यापारातून भरपूर लाभ मिळवू शकता. तसेच कायदा, लोखंड, स्टीलचे उत्पादन कार्य, यंत्रसामुग्री किंवा कारखाना, क्रीडासाहित्य आदि क्षेत्रात लाभ होईल. आपल्या जीवनात यासंबंधित व्यापार कराल तर त्यातून सतत लाभ होईल व नुकसानीची शक्यता कमी असेल. परंतु अनुचित कार्य किंवा प्रतिकूल गुंतवणूक कराल तर त्यातून हानी होऊ शकते. सावधान असावे. आपले वडील एक सज्जन पुरूष असतील व त्यांचा मित्रांची संख्या अधिक असेल. त्याचबरोबर इतरेजनांविषयी विस्तारपूर्वक माहिती असेल. त्यांचे संघटनाकौशल्य उत्तम असल्याने सर्व लोक त्यांच्या प्रभावाखाली असतील. त्याचबरोबर आपणसुद्धा एक प्रतापी, पराक्रमी कार्य करण्यास तत्पर, भावंडानी युक्त व कधी कधी धर्मासंबंधी अरूची दाखवाल. दुष्ट मित्रांपासून आपण सावध असलेले बरे.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु पंचम भावात असेळ व त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी सामान्यतः चांगळे असेळ. ज्योतिष, संगीत व साहित्याविषयी आवड निर्माण होईळ. व यत्नपूर्वक त्याचे ज्ञान मिळवाळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व धनप्राप्तीचे योग संभवतात. महत्वाच्या राजकारणी ळोकांशी ओळखी होतीळ व त्यातून ळाभ संभवतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर असाळ. मुळांकडून सहकार्य मिळेळ. तुमची कार्यक्षमता वाढेळ. पण अन्य गोचरफळ व दशाफळ यंदा अशुभ असल्याने उपरोक्त चांगल्या फळात कधी–कधी कमतरता संभवते.

गोचरीने यंदा शनी प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. वेळप्रसंगी वातजनित रोग संभवतात. त्याचबरोबर मानसिक अशान्ती राहीळ. कौटुम्बिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. परस्पर तणाव अनुभवाळ. पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नतीच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षाचे असेळ. अत्यधिक कष्टानंतर ळाभ मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विलंब होईळ. आर्थिकदृष्टया त्रास संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अनुकूळ नाही. त्यामुळे कष्टानेच सफळता मिळेळ. ज्यामुळे मानसिक तणाव येईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीच्या दुष्प्रभावाने त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान नियमितपणे करावे. त्याचबरोबर शनिवारी मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्याने सुख–शान्ती व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभाशुभ फळे देईळ. ह्या काळात शरीरपकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. अस्वस्थपणा वाटेळ. यंदा दूरचे प्रवास होतीळ. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. कधीकाळी आर्थिक तंत्री जाणवेळ. पण सहात्या भावातीळ केतूच्या मुळे ह्या काळात समाजात तुमचा प्रभाव वाढेळ. शत्रूंना पराजित कराळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण अशुभ आहे. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळनीळ. त्यामुळे संयमपूर्वक कार्य करावे. घाईने निर्णय होऊ नये.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा मधीं बुध चा अंतर रहणार। बुध षष्ठ भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहात पण शुक्र पंचम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूळ नाय आहे, अतः परिश्रम केल्या नंतर पण विशेष सफळता नाय भेंटणारी. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो. असे समय वर कोणी विशेष खर्चे नाय कराय ला पाहिजे. पण नोकरी मधे शुभ फळ प्राप्त होणार बेरोजगारांने रोजगार प्राप्त होणार कुटुम्ब सुख शान्ती अनुकूल रहणारी कोणी अजारी होउ सकतो. शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होणार हुसारी पासून विजय प्राप्त होऊ सकतो. अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2027

यंदा गोचरीने गुरु सहाव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या स्वभावात राग, चिडचिडेपणा आढळेळ व शारीकि स्वास्थ्यावर परिणाम होईळ. मानसिकदृष्टया पण अस्वस्थ रहाळ. त्यामुळे सांसारिक कार्यात उत्साहाचा अभाव असेळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाच्या जोरावर सफळता मिळेळ. ह्या काळात व्यापारात अडथळे येतीळ. नोकरीत पण विरोधक प्रबळ असल्याने पदोन्नतीमध्ये विळम्ब संभवतो. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ. आवश्यक प्रमाणात ळाभ होईळ. पण खर्चाच्या अधिकतेमुळे आर्थिक कमतरता जाणवेळ. पण पैसा मिळण्याकरता तुम्ही सतत प्रयत्नशीळ असाळ.त्याचबरोबर ह्या काळात अन्य गोचर व दशा विशेष अनुकूळ नसल्याने जास्त कष्ट करावे ळागतीळ. तेव्हाच थोडफार सुख मिळेळ. म्हणून तुम्ही गुरुचा उपवास, पूजा तथा दान नियमितपणे करावे.

यंदा गोचरीने शनी द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुख–शान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. परस्पर मतभेद होतीळ. त्याचबरोबर सहकार्य कमी असेळ. ह्या काळात मानसिक स्थिती चांगळी नसेळ पण महत्वाची कार्ये परिभमपूर्वक करण्यास तत्पर असाळ. शत्रू किंवा विरोधक अडथळे आणतीळ. फळतः व्यापार किंवा नोकरीत उन्नतीमध्ये अडचणी येतीळ. त्याचबरोबर धनार्जन पण आवश्यक प्रमाणात कराळ.यंदा गोचर व अन्य दशाफळ अनुकूळ नाही. त्याचबरोबर साडेसातीची शेवटची वर्षे असल्याने कौटुम्बिक, सामाजिक स्तरावर, नोकरी व राजकारणाळ अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. शनीचा अशुभ प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू एकादश भावात तर केतू पंचमात असेळ. त्यमुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात तुम्ही यंदा सफळता मिळवाळ. नोकरी किंवा राजकारणात पदप्राप्ती संभवते. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष शुभ असेळ. धनवृद्धी संभवते. ज्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. पण स्वभावात रात्रीटपणा असेळ. वेळोवेळी क्रोध दर्शवाळ. मुळांची चिंता कराळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर व दशा पण अशुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळतीळ. तरी धीराने कार्य करावे.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा मधीं बुध चा अंतर रहणार। बुध षष्ठ भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहात पण शुक्र पंचम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे. अतः अधूरे कार्य पूर्ण होणार आणि सफळता प्राप्त होणारी. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार. नोकरी मधे उन्नती प्राप्त होणारी तसेच अधिकारयां बरोवर मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्बिक सुख शान्ती रहणारी तसेच परस्पर मधुर संवन्ध रहणार आणि सहयोग देणारे. स्वास्थ्य मध्यम रहणार पण जोखम कार्य पासून सावध रहायला पाहिजे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष रवि ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ शुक्र ची महादशा मधीं बुध चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति रवि ची महादशा मधीं रवि चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी पंचम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि विशेष आहे, अतः व्यापार मधे उन्नती होणारी मोठे अधिकारयां पासून मधुर सम्बन्ध रहणार. नोकरी मधे, उन्नती होउ सकतो मोठे अधिकारयां

पासून मधुर सम्बन्ध रहणार बेरोजगारांना रोजगार प्राप्त होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी रहणारी तसेच परस्पर सहयोग आणि मधुर संवन्ध रहणार शत्रु पासून काही तरी त्रास होउ सकतो अतः असे शुभ समय चा सदुपयोग करायला पाहिजे.

हा वर्ष तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, शुभ कार्य आणि विशेष प्रयोजने उत्साह आणि पराक्रम पासून पूर्ण करणारे. अधूरे जुने कार्य पूर्ण होणार कार्य क्षेत्र विस्तृत कराय ची इच्छा होणारी मित्र आणि सहयोगी कार्य क्षेत्र मधे मदद करणारे. प्रवास पासून नवीन कार्य सफळ होणार कुटुम्ब स्थिति चांगली रहणारी पण कधीं–मधीं संतति पासून चिंता होणारी शत्रु अडचणे उत्पन्न करणारे पण विजय प्राप्त होणारी.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सप्तम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नती होईळ. विनासायास एखादी सफळता मिळेळ. बेरोजगार ळोकांना ह्या काळात काम मिळेळ. अविवाहितांचे विवाह जुळतीळ. पत्नीकूडून सुख व सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध मधुर असतीळ. त्यामुळे कौटुम्बिक सुख मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्व ळोक तुम्हाळा मान देतीळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात चांगळी असेळ व धनार्जन करण्यात सुळ असाळ. परंतु खर्च पण वाढेळ. यंदा अन्य गोचरफळ अशुभ तर दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळे पण अनुभवाळ.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

रवि ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 11/12/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि पंचम भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र द्वादश भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा वर्ष तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, शुभ कार्य आणि विशेष प्रयोजने उत्साह आणि पराक्रम पासून पूर्ण करणारे. अधूरे जुने कार्य पूर्ण होणार कार्य क्षेत्र विस्तृत कराय ची इच्छा होणारी मित्र आणि सहयोगी कार्य क्षेत्र मधे मदद करणारे. प्रवास पासून नवीन कार्य सफळ होणार कुटुम्ब स्थिति चांगली रहणारी पण कधीं–मधीं संतति पासून चिंता होणारी शत्रु अडचणे उत्पन्न करणारे पण विजय प्राप्त होणारी.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे, कधीं–मधीं अशुभ फळ पण प्राप्त होणार तसेच जुने कामना पूर्ण होणारी. आर्थिक स्थित चांगली रहणारी आणि नोकरी मधे उन्नती होउ

सकतो मोठे अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध स्थापित होणार कुटुमविक स्वास्थ्य चांगळा रहणार. धर्म मधे चि उत्पन्न होणारी तसेच अनुभव प्राप्त होणार संत आणि विद्वान पासून लाभ होणार कोणी मांगळिक कार्य वर खर्च होणार कोर्ट केश मधे सफळता प्राप्त होउ सकतो.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष रवि ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष चन्द्र चा अंतर 12/06/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 18/10/2030 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर राहु ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी पंचम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समया तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे, अतः सगड़े अडचणे आणि त्रास उत्पन्न होउ सकतो. विशेष कार्य पूर्ण होण्या साठी उशीर होउ सकतो. मित्र आणि संबन्धी पासून मतभेद उत्पन्न होणार कुटुम्ब मधे अशान्ती रहणारी तसेच मतभेद उत्पन्न होउ सकतो. सफळता साठी फार परिश्रम होणार आणि खूप खर्चे होणार तसेच प्रवास योग आहे अतः जोखम कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे आणि संयम युघ समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे अतः शुभ कार्य मधे असफळता प्राप्त होणारी नोकरी मधे उन्नति साठी उशीर होणार आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होउ सकतो समाजातीळ मध्यम सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्त होणार पण

कुटुम्ब मधे शान्ती रहणारी आणि परस्पर सहयोग रहणार तसेच उत्तम समृद्धी रहणारी अतः इतर स्थानांवर शुभ फळ प्राप्ती साठी संयम पासून कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः इच्छि प्रयोजने सफळ नाय होणारी आणि सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल नाय रहणार तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो आणि पदोन्नति साठी अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती प्रभावित होणारी तसेच सहयोग पण नाय भेंटणार, पण सामाजिक सम्मान यश भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साठी खर्चे क नळा आणि कोणी वर विश्वास नळा करावे, बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो जमीन, सम्बन्धी काही तरी मतभेद किंवा त्रास उत्पन्न होऊ सकतो.

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(24/08/2009 - 24/08/2029)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 24/08/2009 को आरम्भ होकर 24/08/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र पंचम भाव में स्थित है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। शुक्र एक शुभ ग्रह है और भावानात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली में पंचम भाव में स्थित होकर यह एकादश भाव को देख रहा है और इस पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् पंचम भाव संतान, आनंद, कला, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, जुआ या दाँव, प्रेम संबंध, धार्मिक बौद्धिकता, प्रशिक्षण और ज्ञान, प्रचुर धन आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र पंचम भाव में स्थित होकर भाव को प्रबलित कर रहा है। इसके फलस्वरूप आपको इस दशाकाल में कोई छोटी या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

योगकारक ग्रह शुक्र के पंचम भाव अर्थात त्रिकोण में स्थित होने के फलस्वरूप आपको इसके दशा काल में उन्नति करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे एवं आप चल तथा अचल संपत्ति में वृद्धि करेंगे। आप अपने भाग्य को सट्टे-जुए में आजमाने की कोशिश कर सकते हैं या लॉटरी जीत सकते हैं अथवा अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप विलासी जीवन व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय :

आप दलाली का व्यवसाय अपना सकते हैं या सट्टा और इससे मिला-जुलता व्यवसाय कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्दमय रहेगा। आपके जीवन साथी हमेशा आपके सहायक होंगे। आपके बच्चे बहुत ही आज्ञाकारी होंगे, आपका आदर करेंगे और आपकी मानसिक शक्ति तथा आत्मविश्वास को बनाए रखने में आपके सहायक होंगे। आपके बच्चे जीवन में प्रगति तथा परिवार का नाम रोशन कर सकते हैं।

महादशा :- सूर्य
(24/08/2029 - 24/08/2035)

सूर्य की महादशा 24/08/2029 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष के बाद 24/08/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। सूर्य आत्मा, शासन, विद्युत और प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है और पंचम भाव शिक्षा, संतान तथा बुद्धि का सूचक है। अतः इस दशा में आपको संतान से सुख मिलेगा। आपकी मंत्र शास्त्र में रुचि रहेगी और आपको प्रतिष्ठा तथा सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

आज का ग्रह सूर्य आपको उत्तम स्वास्थ्य और शक्ति देगा। आपका स्वास्थ्य आम तौर से उत्तम रहेगा। सूर्य आपको कान्ति तथा जीवन-शक्ति देगा। आपकी इच्छा-शक्ति उत्तम होगी और आपका बल तथा व्यक्तित्व सुन्दर होंगे। मानसिक स्तर पर भी आप मजबूत होंगे और आप में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा रहेगा। आप महत्वाकांक्षी तथा अन्तर्दर्शी होंगे। आपको ताप-संबंधी रोगों, मामूली पित्तदोष तथा पाचन-संबंधी पीड़ाओं के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। शुद्ध भोजन तथा अन्य गतिविधियां आवश्यक हैं।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको सट्टे व निवेश से । धन तथा जीवन की सारी सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। आप भाग्यशाली और समृद्ध होंगे। आपको अपने व्यवसाय या व्यापार में कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। एकादश भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण आपको पिता से धन प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आपको कोई शक्तिशाली तथा अधिकारिक पद मिल सकता है। आप सलाहकार का कार्य करेंगे। आपकी जीवन वृत्ति से संबद्ध अचानक कुछ घटनाएं घट सकती हैं। कोई भी घटना आपके लिये लाभदायक होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी, आप उच्च पद प्राप्त करेंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है या वे यात्रा पर जा सकते हैं जो अन्ततः उनके लिये लाभदायक होंगे। व्यापार और व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ होगा। जहाँ तक आपकी नौकरी और कार्य का प्रश्न है, यह दशा आपके लिए अति उत्तम है जिसमें आपको लाभ और शक्ति की प्राप्ति होगी और आप प्रभावशाली होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके बच्चे समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख प्राप्त होगा। आपकी क्रियाएं सुखकर होंगी,। आपके अनेक मित्र होंगे क्योंकि आप स्वाभाविक रूप से उदार हैं, आपका स्वाभाव अच्छा है ओर आप निष्कपट तथा समाज के प्रति निष्ठावान हैं। आपको अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी को उच्च पद, सरकार से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके पिता के भाग्य में वृद्धि होगी। उनकी आध्यात्मिक तथा दान पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे-भाई-बहनों को साहित्य अथवा संवादपटुता के क्षेत्र में लाभ

हो सकता है और उन्हें सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी में लाभ मिलेगा और वे पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा, खासकर उच्चतर शिक्षा, उत्तम होगी। आपके लिये तकनीकी शिक्षा लाभदायक होगी। आपकी ज्ञानशक्ति उत्तम है और आपको इसका सुन्दर उपयोग करना चाहिए।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(24/08/2029 - 11/12/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/08/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 11/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। शेयर इत्यादि में भी लाभ संभव है। संतान पढ़ाई आदि में नाम कमाएगी। आपको उच्चपद की प्राप्ति हो सकती है या सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। मंत्र, योग, धार्मिक प्रवचनों आदि में रुचि बढ़ेगी।

आपके पिता के लिए समय भाग्यशाली है। उनकी प्रसिद्धि बढ़ेगी। वे अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए समय संतोषजनक है। जीवनसाथी की आय बढ़ेगी। मामा के परिवार में खर्चा बढ़ सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायतें जैसे बुखार, पेट की खराबी आदि से बचाव करना हितकर रहेगा। भाग्यसंवर्धन के लिए रविवार के दिन सूर्योदय के समय गेहूं, लाल-पुष्प और चंदन आदि का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(11/12/2029 - 12/06/2030)

आपकी सूर्य की महादशा 24/08/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 12/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अवधि में आप किसी ऐसे काम को करना पसंद करेंगे जिसमें जनता की नज़रों से दूर रहकर कर्मठ और निस्वार्थ भाव से काम कर सकें। प्राच्यविद्या में आपकी रुचि होगी। दान-पुण्य आदि पर धन खर्च होगा। सेवारत जातकों को कार्यालय के कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापारीगण खूब लाभ कमाएंगे। सलाहकारों के कार्य में मामूली परिवर्तन हो सकता है।

भाई-बहनों का भाग्य उत्तम रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हो सकती है।

शोधकर्ताओं के लिए समय सौभाग्यशाली है। एकांत में किया गया कार्य शुभफलप्रदाता होगा। आपकी माता के लिए समय शुभ है। आपको पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। संतान के कार्यों में प्रगति होगी। आपको नेत्र और हाथ-पैरों के मामूली रोग हो सकते हैं। शुभत्व की वृद्धि हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(12/06/2030 - 18/10/2030)

आपकी सूर्य की महादशा 24/08/2029 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 18/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में नौकरी में परिवर्तन हो सकता है। आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के लिए आर्थिक रूप से समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी धर्म या अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। मामापक्ष के लोगों को धनहानि हो सकती है। आपको जायदाद से लाभ बढ़ सकता है।

आपके पिता को किसी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। वे वर्तमान मकान में कुछ परिवर्तन कर सकते हैं। माता जायदाद क्रय कर सकती हैं। छोटे भाई-बहनों को व्यवसाय में सफलता के लिए अधिक परिश्रम करना चाहिए। बड़े भाई-बहनों के परिवार में तनाव हो सकता है।

आपको आर्थिक लाभ होगा। कुछ अतिरिक्त खर्चे हो सकते हैं। व्यापारियों को अतिरिक्त निवेश करना पड़ सकता है। सट्टेबाजी से कुछ लाभ हो सकता है पर सावधानी आवश्यक है। निवेश से पूर्व विस्तृत विश्लेषण करना ठीक रहेगा।

उदर और हृदय से संबंधित रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, गुड़ और लाल दाल का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(18/10/2030 - 12/09/2031)

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/08/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 18/10/2030 को प्रारंभ होकर 12/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में भाग्य मध्यम रहेगा। धर्म और अध्यात्म में समय व्यतीत करेंगे। कार्यों में विरोध हो सकता है, अतः विवाद से बचें। शत्रुओं का नाश होगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। समाज सेवा से लाभ होगा।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है, मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति उत्तम रहेगी। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और उनकी व्यस्तता बढ़ेगी। माता की धर्म में रुचि बढ़ेगी। भाई-बहनों को कार्य में लाभ होगा और ख्याति मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को अप्रत्याशित

लाभ हो सकता है। काफी दिनों से चल रही बीमारी से सावधान रहें, विशेषतः नेत्रों और अस्थियों का ध्यान रखें; ज्वर आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें और नीले पदार्थों का दान करें।

ॐ रां राहवे नमः